Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© SHIKSHA SAMVAD|VOLUME-04| ISSUE-01| SEPTEMBER- 2026
Impact Factor: RPRI 3.79, SJIF-5.23
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.42

रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों की मनोवैज्ञानिकता : एक अध्ययन

खिंजन लाल साहू[1], डॉ. बिंदु साहू[2]
शोधार्थी, हिंदी विभाग, भारतीय विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)[1]
निर्देशक, हिंदी विभाग, भारतीय विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)[2]

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस भारतीय साहित्य की ऐसी कालजयी कृति है जिसमें धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना के साथ-साथ मानवीय मनोविज्ञान का अत्यंत सूक्ष्म और प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इसके प्रमुख पात्र केवल आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत नहीं होते, बल्कि उनके भीतर प्रेम, करुणा, त्याग, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, भय, द्वंद्व, कर्तव्य-बोध, आत्मसम्मान तथा मानसिक संघर्ष जैसी विविध मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ दिखाई देती हैं। राम के व्यक्तित्व में मर्यादा, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा और भावनात्मक संतुलन है, जबकि सीता के चरित्र में प्रेम, आत्मसम्मान, त्याग, धैर्य और मानसिक दृढ़ता का समन्वय दिखाई देता है। लक्ष्मण में भ्रातृप्रेम के साथ तीव्र भावुकता एवं आक्रोश है। भरत का चरित्र त्याग, अपराध-बोध, भ्रातृप्रेम और नैतिक आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत करता है। हनुमान में आत्मविश्वास, निष्ठा, समर्पण और सेवा-भाव की मनोवैज्ञानिक संरचना दिखाई देती है। इसके विपरीत रावण के व्यक्तित्व में अहंकार, कामना, सत्ता-लिप्सा और आत्ममुग्धता प्रमुख हैं, जबकि कैकेयी के मन में उत्पन्न असुरक्षा, मोह और भ्रम उसके निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार रामचरितमानस के पात्र मनुष्य की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों और जीवन-संघर्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन पात्रों की मनोवैज्ञानिक संरचना का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करना है कि तुलसीदास ने किस प्रकार मानवीय मन की जटिलताओं को काव्यात्मक रूप में अभिव्यक्त किया है।

प्रमुख शब्द: रामचरितमानस, मनोवैज्ञानिकता, राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, रावण, कैकेयी, मानवीय संवेदना।

भूमिका

भारतीय साहित्य परंपरा में रामचरितमानस का विशिष्ट स्थान है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसके माध्यम से मानव जीवन के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति प्रदान की। मानस के पात्रों में मानवीय मन की अनेक अवस्थाओं का स्वाभाविक एवं प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

मनोविज्ञान मनुष्य के व्यवहार, भावनाओं, विचारों, इच्छाओं, मानसिक संघर्षों तथा व्यक्तित्व का अध्ययन करता है। साहित्य में मनोवैज्ञानिकता का अर्थ पात्रों के बाह्य व्यवहार के साथ उनके अंतर्मन, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और मानसिक द्वंद्व को समझना है। इस दृष्टि से रामचरितमानस का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

राम का वनगमन केवल एक धार्मिक घटना नहीं है; यह कर्तव्य और व्यक्तिगत सुख के बीच उत्पन्न संभावित मानसिक द्वंद्व को भी सामने लाता है। सीता का वनगमन उनके प्रेम, आत्मनिर्णय और दांपत्य निष्ठा का परिचायक है। लक्ष्मण का व्यवहार प्रेम और आक्रोश के बीच चलने वाले मानसिक

संघर्ष को व्यक्त करता है। भरत के व्यक्तित्व में त्याग और आत्मग्लानि की अनुभूति दिखाई देती है। दूसरी ओर रावण का व्यक्तित्व इस बात को रेखांकित करता है कि अत्यधिक अहंकार और अनियंत्रित इच्छाएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व को किस प्रकार विनाश की ओर ले जा सकती हैं।

अतः मानस के प्रमुख पात्रों की मनोवैज्ञानिकता का अध्ययन तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला को समझने के साथ-साथ मानवीय मन की जटिलताओं को समझने में भी सहायक है।

अध्ययन के उद्देश्य

- रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों की मनोवैज्ञानिक संरचना का अध्ययन करना।
- पात्रों की भावनात्मक एवं मानसिक अवस्थाओं का विश्लेषण करना।
- राम के व्यक्तित्व में कर्तव्य, मर्यादा और भावनात्मक संतुलन का अध्ययन करना।
- सीता के व्यक्तित्व में प्रेम, त्याग, आत्मसम्मान एवं मानसिक दृढ़ता का विश्लेषण करना।
- लक्ष्मण और भरत के मानसिक द्वंद्व एवं भावनात्मक संसार को समझना।
- हनुमान के व्यक्तित्व में भक्ति, आत्मविश्वास और समर्पण की मनोवैज्ञानिक भूमिका को स्पष्ट करना।
- रावण एवं कैकेयी के चरित्र में नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
- तुलसीदास की चरित्र-चित्रण कला की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को रेखांकित करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं मनोवैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए रामचरितमानस को प्राथमिक स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। इसके अतिरिक्त तुलसी साहित्य, रामकथा संबंधी आलोचनात्मक ग्रंथों तथा साहित्यिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का सहारा लिया गया है।

राम का मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व

राम रामचरितमानस के केंद्रीय पात्र हैं। उनके व्यक्तित्व की सबसे प्रमुख विशेषता भावनात्मक संतुलन है। वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होते।

राम के वनवास की स्थिति में व्यक्तिगत सुख और राजकीय अधिकार का प्रश्न उपस्थित होता है, किंतु वे पिता की आज्ञा तथा पारिवारिक मर्यादा को प्राथमिकता देते हैं। उनके व्यक्तित्व में आत्मनियंत्रण अत्यंत प्रबल है।

राम की मनोवैज्ञानिकता में करुणा और संवेदनशीलता भी प्रमुख है। वे निषादराज, केवट, शबरी और वानर समुदाय के प्रति आत्मीयता का व्यवहार करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व सामाजिक संवेदना से संपन्न है।

राम का चरित्र यह स्थापित करता है कि मानसिक शक्ति केवल भावनाओं के अभाव में नहीं, बल्कि भावनाओं पर विवेकपूर्ण नियंत्रण रखने में निहित है।

सीता की मनोवैज्ञानिकता

सीता का व्यक्तित्व प्रेम, त्याग, आत्मसम्मान, धैर्य और मानसिक दृढ़ता का प्रतीक है। राम के वनगमन के निर्णय में उनका स्वयं वन जाने का आग्रह उनके दांपत्य प्रेम के साथ-साथ आत्मनिर्णय की क्षमता को भी दर्शाता है।

वन का कठिन जीवन, रावण द्वारा हरण तथा अशोक वाटिका में रहने की परिस्थिति सीता के मानसिक संघर्ष को सामने लाती है। वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आत्मसम्मान और नैतिक विश्वास को बनाए रखती हैं।

सीता का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि संवेदनशीलता कमजोरी नहीं है। भावनात्मक गहराई के साथ मानसिक दृढ़ता का होना उनके व्यक्तित्व की विशेषता है।

लक्ष्मण की मनोवैज्ञानिकता

लक्ष्मण का व्यक्तित्व अत्यंत भावुक और प्रतिक्रियाशील है। राम के प्रति उनका प्रेम इतना गहरा है कि वे सुख-सुविधाओं का त्याग कर उनके साथ वन जाते हैं।

उनके चरित्र में भ्रातृप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग के साथ तीव्र आक्रोश भी दिखाई देता है। अन्याय या राम के प्रति किसी भी प्रकार की प्रतिकूलता उन्हें मानसिक रूप से विचलित करती है।

लक्ष्मण की मनोवैज्ञानिकता का प्रमुख आधार भावनात्मक लगाव है। वे राम को केवल बड़े भाई के रूप में नहीं, बल्कि अपने जीवन के आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं।

भरत की मनोवैज्ञानिकता

भरत का चरित्र रामचरितमानस में त्याग और आत्मग्लानि की अद्भुत अभिव्यक्ति है। राम के वनवास के लिए उनकी कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती, फिर भी वे स्वयं को मानसिक रूप से उस घटना से जोड़ लेते हैं।

भरत का राम के प्रति प्रेम सत्ता की इच्छा पर विजय प्राप्त करता है। उन्हें प्राप्त राज्य उनके लिए सुख का कारण नहीं बनता। वे राम की चरण-पादुका को सिंहासन पर स्थापित कर स्वयं प्रतिनिधि के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं।

भरत के व्यक्तित्व में अपराध-बोध, भ्रातृप्रेम, त्याग और नैतिक आदर्श का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

हनुमान की मनोवैज्ञानिकता

हनुमान रामचरितमानस के सबसे ऊर्जावान और सकारात्मक पात्रों में से हैं। उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, साहस, बुद्धिमत्ता, निष्ठा और समर्पण दिखाई देता है।

हनुमान की सबसे महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक विशेषता उनकी उद्देश्यपरकता है। राम के प्रति भक्ति उन्हें असाधारण मानसिक शक्ति प्रदान करती है। समुद्र लाँघने, सीता की खोज करने और लंका में प्रवेश करने जैसे कार्य उनके आत्मविश्वास और साहस का प्रमाण हैं।

हनुमान का व्यक्तित्व यह दर्शाता है कि स्पष्ट उद्देश्य, विश्वास और समर्पण व्यक्ति की मानसिक क्षमताओं को अत्यधिक विकसित कर सकते हैं।

रावण की मनोवैज्ञानिकता

रावण का व्यक्तित्व अत्यंत जटिल है। उसमें ज्ञान, शक्ति और सामर्थ्य के साथ अहंकार, कामना, सत्ता-लिप्सा और आत्ममुग्धता भी दिखाई देती है। रावण अपनी शक्तियों और उपलब्धियों के कारण स्वयं को अजेय समझने लगता है। उसका अहंकार उसके विवेक को कमजोर करता है। विभीषण तथा अन्य शुभचिंतकों की सलाह को स्वीकार न करना उसकी मानसिक जड़ता को प्रदर्शित करता है।

रावण के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास यह संकेत करते हैं कि ज्ञान और शक्ति यदि विवेक तथा आत्मसंयम से नियंत्रित न हों तो व्यक्ति के विनाश का कारण बन सकते हैं।

कैकेयी की मनोवैज्ञानिकता: कैकेयी का चरित्र मानवीय मन में उत्पन्न असुरक्षा, मोह और प्रभावग्रस्तता का उदाहरण है। प्रारंभ में उनका राम के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार दिखाई देता है, किंतु मंथरा के प्रभाव से उनके विचारों में परिवर्तन आता है।

उनके मन में अपने पुत्र भरत के भविष्य और अधिकार को लेकर चिंता उत्पन्न होती है। धीरे-धीरे यह चिंता आग्रह में और आग्रह कठोर निर्णय में बदल जाता है।

कैकेयी का चरित्र बताता है कि बाहरी प्रभाव, असुरक्षा और भावनात्मक भ्रम व्यक्ति के निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं।

दशरथ की मनोवैज्ञानिकता

दशरथ का व्यक्तित्व प्रेम और कर्तव्य के बीच उत्पन्न मानसिक संघर्ष का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे राम से अत्यंत प्रेम करते हैं, किंतु कैकेयी को दिए गए वचनों से बंधे हुए हैं।

राम के वनवास की घोषणा उनके लिए गहरे मानसिक आघात का कारण बनती है। पुत्र-वियोग की कल्पना ही उनके मन को विचलित कर देती है। उनके चरित्र में वात्सल्य, अपराध-बोध, असहायता और मानसिक पीड़ा का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

शूर्पणखा की मनोवैज्ञानिकता

शूर्पणखा का चरित्र अनियंत्रित इच्छा, आकर्षण, अस्वीकार से उत्पन्न आक्रोश और प्रतिशोध की भावना को अभिव्यक्त करता है। उसकी इच्छा पूरी न होने पर उत्पन्न प्रतिक्रिया बताती है कि असफल इच्छा किस प्रकार क्रोध और प्रतिशोध में बदल सकती है।

विभीषण की मनोवैज्ञानिकता

विभीषण का चरित्र विवेक, नैतिक चेतना और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतिनिधि है। पारिवारिक संबंधों और नैतिक मूल्यों के बीच संघर्ष की स्थिति में वे नैतिकता का पक्ष चुनते हैं।

उनका चरित्र यह संकेत देता है कि व्यक्ति का नैतिक विवेक कभी-कभी पारिवारिक अथवा सामाजिक संबंधों से भी अधिक शक्तिशाली हो सकता है।

प्रमुख पात्रों की तुलनात्मक मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ

पात्र प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता

राम आत्मसंयम, कर्तव्यबोध, धैर्य

सीता प्रेम, त्याग, आत्मसम्मान, धैर्य

लक्ष्मण भावुकता, भ्रातृप्रेम, आक्रोश

भरत त्याग, आत्मग्लानि, भ्रातृप्रेम

हनुमान आत्मविश्वास, साहस, समर्पण

रावण अहंकार, कामना, सत्ता-लिप्सा

कैकेयी असुरक्षा, मोह, प्रभावग्रस्तता

दशरथ वात्सल्य, मानसिक द्वंद्व, वियोग

विभीषण विवेक, नैतिक चेतना

शूर्पणखा इच्छा, अस्वीकार, आक्रोश

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

रामचरितमानस के पात्रों की मनोवैज्ञानिकता आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति तनाव, पारिवारिक संघर्ष, भावनात्मक असुरक्षा, महत्वाकांक्षा, अहंकार और निर्णय-संबंधी द्वंद्व जैसी समस्याओं से गुजरता है।

राम का आत्मसंयम, सीता का धैर्य, भरत का त्याग, हनुमान का आत्मविश्वास और विभीषण का विवेक आधुनिक व्यक्ति को मानसिक संतुलन एवं नैतिक निर्णय की प्रेरणा दे सकते हैं। इसके विपरीत रावण का अहंकार और कैकेयी की प्रभावग्रस्तता नकारात्मक मानसिक प्रवृत्तियों के परिणामों के प्रति सावधान करते हैं।

इस दृष्टि से रामचरितमानस केवल धार्मिक अथवा साहित्यिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानवीय मन और व्यवहार को समझने वाला महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक ग्रंथ भी है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि तुलसीदास की चरित्र-सृष्टि अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। उनके पात्र केवल आदर्श अथवा अनादर्श के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि उनमें मानवीय मन की विविध प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं।

राम में आत्मसंयम और कर्तव्यबोध, सीता में भावनात्मक दृढ़ता एवं आत्मसम्मान, लक्ष्मण में तीव्र भावुकता, भरत में त्याग और आत्मग्लानि, हनुमान में आत्मविश्वास एवं समर्पण तथा विभीषण में नैतिक विवेक प्रमुख रूप से दिखाई देता है। दूसरी ओर रावण के माध्यम से अहंकार और अनियंत्रित इच्छाओं के दुष्परिणाम तथा कैकेयी के माध्यम से असुरक्षा और बाहरी प्रभाव के कारण उत्पन्न मानसिक परिवर्तन को समझा जा सकता है।

इस प्रकार तुलसीदास ने पात्रों के माध्यम से मनुष्य के भीतर सक्रिय सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की मनोवैज्ञानिक शक्तियों का चित्रण किया है। रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक पक्ष इसकी सार्वकालिकता का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। इसके पात्र आज भी पाठक को आत्मचिंतन, आत्मसंयम, नैतिक निर्णय, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध में विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास — श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. तुलसीदास — विनय पत्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. रामचंद्र शुक्ल — हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. हजारीप्रसाद द्विवेदी — हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी — हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
6. नगेन्द्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. रामविलास शर्मा — भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. विश्वनाथ त्रिपाठी — लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. बलदेव वंशी — तुलसी साहित्य में जीवन-मूल्य, साहित्य सहकार, नई दिल्ली।
10. बच्चन सिंह — हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. नामवर सिंह — इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. प्रेमशंकर — तुलसी साहित्य में मानवीय मूल्य, साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।

Cite the Article:

साहू, खिंजन लाल, साहू, डॉ. बिंदु. (2026). रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों की मनोवैज्ञानिकता : एक अध्ययन. Shiksha Samvad: International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1), 359–363.
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.42
Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.